

को
जाए
गा
न
द
ा

रुपए

वार
ल
ना
है।



कानपुर

प्रगति प्रभात

बुधवार 02 नवंबर 2022

प्रभानन्दशापन्ना ने उत्तराखण्ड का दिया गया है।

गढ़। पुलस न आसचास का लागा

कानपुर अंदर महान बाल वर्ष का साल है।

वैज्ञानिकों ने दिए फसल अवशेष प्रबंधन की तकनीकी जानकारियां

कानपुर 2 सोमवार के अधीन संचालित दस्तीप नगर विकास बृहि विज्ञान बोर्ड द्वारा बोर्ड पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना जीती है। योग्य विवरणीय कृषक प्रशिक्षण के तीसरे दिन वैज्ञानिकों ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों की समझाया। इस अवसर पर बोर्ड के अध्यक्ष एवं वर्गीकृत वैज्ञानिक डॉ रामकृष्णन ने कृषकों को बताया कि मर्दी चौपर कृषि बैंक से फसल अवशेषों को बारीक तूकड़ों में बाटवार भूमि में पिला दिया जाता

है। कृषक द्वारा मृदा से गौधों को नोहू भी बुखारी कर देते हैं। उन्होंने किसानों को जागरूक करते हुए, कहाया कि फसल अवशेषों का मल्थ के साथ में उत्थान करके खराकावारी को भी कम किया जा सकता है। साथ ही माल मृदा भी मैल में भी मूध्यम होता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष गर्मी के तापमान को भी कम करता है। फसल अवशेष प्रबंधन के नीड़ल अधिकारी डॉ सुलभ खान किसानों को बताया कि मृदा में कर्बोनिक पदार्थ ही एकमात्र स्रोत

है। किसके द्वारा मृदा से गौधों को विभिन्न पोषक तत्वों को उपलब्ध हो जाते हैं। तथा बैंकाइ द्वारा फसल कटाई करने पर जनावर की तुलना में 1.29 गुना अन्य फसल अवशेष होता है। यह मृदा में सहज रूप से उपलब्ध करता है। उन्होंने कहा कि किसानों एवं कृषक महिलाओं भी फसल अवशेष बृद्धि करते हैं। डॉक्टर खान ने किसानों को संबोधित करते हुए कहाया कि फसल अवशेषों में लगभग सभी पोषक तत्व होते हैं तो किन नाइट्रोजन 0.45 प्रतिशत होते हैं। बोर्ड के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को बताया कि फसल अवशेषों में जल लगाने से अधिकार या दुष्प्रभाव, मृदा के भौतिक गुणों पर प्रभाव एवं पक्काओं के लिए हरे चारे की कमी हो जाती है।

के लिए बोर्ड की वैज्ञानिक डॉ निमिया अवसरी ने किसानों एवं कृषक महिलाओं भी फसल अवशेष प्रबंधन कर मृदा भी उपजाऊ रूप को बढ़ाने के टिप्पणी दिए। और कहा कि ऐसी भूमियों में सब्जी गुणवत्ता पर डबाव होती है। इस कार्यक्रम में डॉक्टर अलप बूमार मिहे डॉक्टर चिनोद प्रबाल एवं डॉ अरुण कुमार सिंह नामिया रहे। इस अवसर पर महानगरपाली गाँव के 25 किसानों अनुपपुर, कुदापुर एवं ने प्रतिभाव किया।





राष्ट्रीय सरकार

aswaroop.in

टी20 विश्व कप फाइनल में भारत और द्वितीय होमे: मिलाली 10

कृषक प्रशिक्षण के तीसरे दिन वैज्ञानिकों ने दिए फसल अवशेष प्रबंधन की तकनीकी जानकारियां

कानपुर। सीएसए के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा केंद्र पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण के तीसरे दिन वैज्ञानिकों ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों को समझाया। इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष एवं चरित्र वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश ने कृषकों को बताया कि स्ट्रॉ चॉपर कृषि यंत्र से फसल अवशेषों को बारीक टुकड़ों में काटकर भूमि में मिला दिया जाता है। तत्पश्चात हैप्पी सीटर द्वारा सीधे गेहूं की बुवाई कर देते हैं। उन्होंने किसानों को जागरूक करते हुए बताया कि फसल अवशेषों का मल्च के रूप में प्रयोग करके खरपतवारों को भी कम किया जा सकता है। साथ ही साथ मृदा की सेहत में भी सुधार होता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष गर्मी के तापमान को भी कम करता है। फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान किसानों को बताया कि मृदा में कार्बनिक पदार्थ ही एकमात्र स्रोत है। जिसके द्वारा मृदा से पौधों

को विभिन्न पोषक तत्वों को उपलब्ध हो जाते हैं। तथा कंबाइन द्वारा फसल कटाई करने पर अनाज की तुलना में 1.29 गुना

एवं पशुओं के लिए हरे चारे की कमी हो जाती है। केंद्र की वैज्ञानिक डॉ निमिषा अवस्थी ने किसानों एवं कृषक महिलाओं



अन्य फसल अवशेष होता है। यह मृदा में सड़कर कार्बनिक पदार्थ की वृद्धि करते हैं। डॉक्टर खान ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि फसल अवशेषों में लगभग सधी पोषक तत्व होते हैं लेकिन नाइट्रोजन 0.45 प्रतिशत होता है। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से पर्यावरण पर दुष्प्रभाव, मृदा के भौतिक गुणों पर प्रभाव

को फसल अवशेष प्रबंधन कर मृदा की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने के टिप्प दिए और कहा कि ऐसी भूमियों में सब्जी गुणवत्ता पर उत्पाद होती है। इस कार्यक्रम में डॉक्टर अजय कुमार सिंह डॉक्टर विनोद प्रकाश एवं डॉ अरुण कुमार सिंह उपस्थित रहे। इस अवसर पर अनूपपुर, रुदापुर एवं सहतावनपुरवा गांव के 25 किसानों ने प्रतिभाग किया।

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com



श्रीलंका वे अफगानिस्तान को छह विकेट से रौंदा

वैज्ञानिकों ने दिए फसल अवशेष प्रबंधन की तकनीकी जानकारियाँ

कानपुर (नगर छाया समाचार)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा केंद्र पर आज फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण के तीसरे दिन वैज्ञानिकों ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों को समझाया। इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ



वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश ने कृषकों को बताया कि स्ट्रॉ चॉपर कृषि यंत्र से फसल अवशेषों को बारीक टुकड़ों में काटकर भूमि में मिला दिया जाता है। तत्पश्चात हैप्पी सौडर द्वारा सीधे गेहूं की बुवाई कर देते हैं। उन्होंने किसानों को जागरूक करते हुए बताया कि फसल अवशेषों का मल्च के रूप में प्रयोग करके खरपतवारों को भी कम किया जा सकता है। साथ ही साथ मृदा की सेहत में भी सुधार होता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष गर्भी के तापमान को भी कम करता है। फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान किसानों को बताया कि मृदा में कार्बनिक पदार्थ ही एकमात्र स्रोत है। जिसके द्वारा मृदा से पौधों को विभिन्न पोषक तत्वों को उपलब्ध हो जाते हैं। तथा कंबाइन द्वारा फसल कटाई करने पर अनाज की तुलना में 1.29 गुना अन्य फसल अवशेष होता है। यह मृदा में सङ्कर कार्बनिक पदार्थ की वृद्धि करते हैं। डॉक्टर खान ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि फसल अवशेषों में लगभग सभी पोषक तत्व होते हैं लेकिन नाइट्रोजन 0.45 प्रतिशत होता है। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से पर्यावरण पर दुष्प्रभाव, मृदा के भौतिक गुणों पर प्रभाव एवं पशुओं के लिए हरे चारे की कमी हो जाती है। केंद्र की वैज्ञानिक डॉ निमिषा अवस्थी ने किसानों एवं कृषक महिलाओं को फसल अवशेष प्रबंधन कर मृदा की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने के टिप्प दिए और कहा कि ऐसी भूमियों में सब्जी गुणवत्ता पर उत्पाद होती है। इस कार्यक्रम में डॉक्टर अजय कुमार सिंह डॉक्टर विनोद प्रकाश एवं डॉ अरुण कुमार सिंह उपस्थित रहे। इस अवसर पर अनूपपुर, रुदापुर एवं सहतावनपुरवा गांव के 25 किसानों ने प्रतिभाग किया।